पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.11.2017 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868002130

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
के तत्वावधान में
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
शनिवार, 23 दिसम्बर 2017,
प्रातः 9.30 से 11 तक
स्थानः सांसद प्रवेश साहिब सिंह वर्मा
निवास—20 विंडसर पैलेस,
जनपथ, नई दिल्ली
—अनिल आर्य, संयोजक

वर्ष-34 अंक-11 कार्तिक-2074 दयानन्दाब्द 193 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2017 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.11.2017, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 134 वां महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्नः दिल्ली हाट में 11 कुण्डीय यज्ञ हुआ व भव्य संगीत संन्ध्या में लोग झूम उठे

महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड के विरूद्ध लड़ना सिखाया - विधायक वन्दना कुमारी

मुख्य अतिथि श्रीमती वन्दना कुमारी (विधायक दिल्ली सरकार) का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, ओमप्रकाश गुप्ता, प्रवीन आर्या, उर्मिला आर्या, सुरेन्द्र कोहली। द्वितीय चित्र—यज्ञ प्रेमी श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,प्रेमकुमार सचदेवा,सुरेश आर्य,देवेन्द्र भगत व दुर्गेश आर्य।

शुक्रवार, 20 अक्तुबर 2017, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में महान समाज सुधारक,आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 134 वां बलिदान दिवस दिल्ली हाट,पीतम पुरा,दिल्ली के विशाल ओपन थियेटर में मनाया गया। लगभग 800 से अधिक उत्साही आर्य जन समारोह में सम्मिलित हुए। 11 कुण्डीय यज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ, युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया व सी.ए. तिलक चांदना,सुरेश आर्य,नरेन्द्र कालरा,उर्मिला—राजीव आर्य आदि मुख्य यज्ञमान बने। इस अवसर पर आर्य समाज की कर्मठ महिलाओं को ''आर्य महिला गौरव'' अवार्ड से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि विधायक वन्दना कुमारी ने कहा कि पाखण्ड के विरूद्ध महर्षि दयानन्द ने ही सबसे पहले शंखनाद किया था,उन्होंने कहा कि आर्य समाज कुरितियों के विरूद्ध जनजागरण का कार्य सराहनीय रूप से कर रहा है, यह एक जागरूक समाज है।

सुप्रसिद्धआर्य गायक नरेन्द्र आर्य सुमन,सुदेश आर्या, अंकित उपाध्याय के भजनों व गीतो पर आर्य जन झूम उठे, अपने आप में यह कार्यकम अविस्मरणीय व ऐतिहासिक रहा जहां जोश व उत्साह से सारी आर्य जनता बाल, वृद्व, महिलायें सरोबार थे। उतरी दिल्ली स्थाई समिति के अध्यक्ष श्री तिलक राज कटारिया, पूर्व पार्षद यशपाल आर्य, समाजसेवी सुरेन्द्र कोहली, आर्य नेता दर्शन अग्निहोत्री, धर्मपाल परमार, सुरेन्द्र शास्त्री, सुशील बाली, आर.के.दुआ, अशोक आर्य, रामकुमार सिंह, यशोवीर आर्य, महामंत्री महेन्द्र भाई, प्रवीन आर्य, विनोद कालरा, व्रतपाल भगत, सोहनलाल आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता, डा.धर्मवीर आर्य, धर्मपाल आर्य, दिनेशसिंह आर्य, विजय आर्य, यज्ञवीर चौहान, अमीरचन्द रखेजा, जवाहर भाटिया, विनोद बजाज, रवि चडडा, अमरनाथ बत्रा, कृष्णा सपरा, प्रभा आर्या, जीवनलाल आर्य, संजीव आर्य, सुरेन्द्र कोछर, महेन्द्र टांक, सोहनलाल मुखी, अमिता सपरा, महेन्द्र मनचंदा, निर्मल जावा, नरेन्द्र कस्तूरिया, नरेन्द्र अरोड़ा, वेदप्रकाश आर्य, ओमप्रकाश नागिया आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। समारोह के पश्चात सभी के लिये सुन्दर ऋषि लंगर का प्रबन्ध था, जिसका आनन्द लेकर सभी विदा हुए।

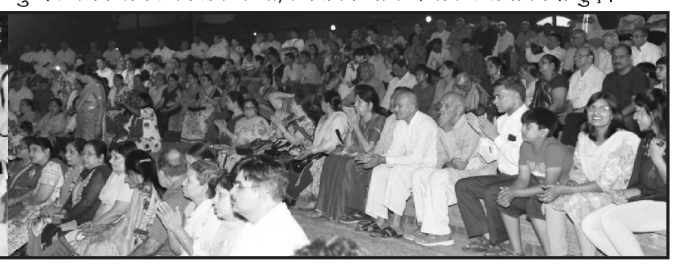

जोत से जोत जलाते रहो कि धुन पर दीप जलाते डा.अनिल आर्य,प्रवीन आर्या,गोपाल जैन,सुरेश आर्य,माधव सिंह,संजय सपरा,गौरव,अमित,शिवम मिश्रा,प्रदीप आर्य,दीपक आर्य आदि व द्वितीय चित्र दिल्ली हाट पीतम पुरा के ओपन थियेटर का सुन्दर दृश्य।

दानी महानुभावों से अपीलः-

यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली—110007, आई.एफ.एस.कोड-SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित
— डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

श्री कृष्ण का पवित्र और महान जीवन चरित

श्री कृष्ण महाभारत के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पात्र थे। महाभारत का युद्ध द्वापर युग के अन्त में अब से लगभग 5200 वर्ष पूर्व हुआ। श्री कृष्ण के जीवन चरित का प्रमाणिक स्रोत महाभारत का पुस्तक ही है। महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण का जीवन बड़ा पवित्र और महान था। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो – ऐसा नहीं लिखा।

महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण की एक पत्नी थी – रुक्मिणी। विवाह के बाद श्री कृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ 12 वर्ष तक हिमालय पर्वत पर रहकर ब्रह्मचर्य का पालन किया। उसके पश्चात उनके यहां एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम प्रद्युम्न रखा गया। प्रद्युम्न बड़ा होकर हू बहू अपने पिता श्री कृष्ण जैसा ही दीखता था।

महाभारत में राधा नाम की किसी स्त्री का कोई ज़िकर नहीं है।

राजसूय यज्ञ (महाभारत के युद्ध के पहले की अवस्था है) – पाण्डवों के राज्य का तेज सभी जगह पहुँच चुका था। प्रजा सुखी थी। सभी राजे–महाराजे उनका सिक्का मानते थे। तब युधिष्ठिर ने महाराजाधिराज (चक्रवर्ती सम्राट) की उपाधि पाने के लिए राजसूय यज्ञ की ठानी। इसके सम्बन्ध में उसने अपने मन्त्रियों और भाईयों को बुलाकर पूछा – क्या मैं राजसूय यज्ञ कर सकता हूँ? सबने जवाब दिया – हां, अवश्य कर सकते हैं, आप इसके योग्य पात्र हैं। व्यास आदि ऋृषियों से यही प्रश्न किया। उन सबने भी हां में ही उत्तर दिया। परन्तु युधिष्ठिर को श्री कृष्ण से सम्मति लिए बिना तसल्ली न हुई। उन्होंने श्री कृष्ण से कहा – हे कृष्ण! कोई तो मित्रता के कारण मेरे दोष नहीं बताता, कोई स्वार्थवश मीठी–मीठी बातें करता है। पृथ्वी पर ऐसे लोग ही अधिक हैं। उनकी सम्मति से कोई काम नहीं किया जा सकता। आप इन दोषों से रहित हैं। इसलिए आप ही मुझे ठीक–ठीक सलाह दें। तब श्री कृष्ण बोले – महान पराक्रमी जरासन्ध के जीते जी आपका राजसूय यज्ञ पूरा न होगा। उसको हराने के बाद ही यह महान कार्य सफल हो सकेगा।

जरासन्ध वध – जरासन्ध बड़े विशाल और वैभवशाली राज्य मगध का राजा था। वह बड़ा क्रूर और अत्याचारी था। उसने अपने यहां 86 राजाओं को बन्दी बना रखा था और यह ऐलान कर रखा था कि जब इनकी संख्या 100 हो जाएगी वह इन सबकी बलि चढ़ा देगा। यह अत्याचार श्री कृष्ण को सहन नहीं था। इसी कारण से वे उसे समाप्त करना चाहते थे। जरासन्ध का जन, धन, बल इतना अधिक था कि रणक्षेत्र में उसे हराना असम्भव था। श्री कृष्ण ने नीति से जरासन्ध का भीम से युद्ध करवा दिया जिसमें जरासन्ध मारा गया। तब श्री कृष्ण ने सभी बन्दी राजाओं को मुक्त कर दिया और जरासन्ध के पुत्र सहदेव को मगध का राजा बना दिया।

प्रथम अर्घ्य (पहला सम्मान) – राजसूय यज्ञ आरम्भ होने पर भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि उपस्थित राजाओं में जो सबसे श्रेष्ठ है उसे ही प्रथम अर्घ्य देना चाहिए। युधिष्ठिर ने भीष्म से ही पूछ लिया कि ऐसा व्यक्ति कौन है जो पहले अर्घ्य पाने का पात्र है। इस पर भीष्म ने कहा – जैसे चमकने वाले सभी तारों में सूर्य सबसे अधिक प्रकाशमान है वैसे ही इन सब राजाओं में श्री कृष्ण तेज, बल, पराक्रम में सबसे अधिक हैं। इसलिए वे ही प्रथम अर्घ्य पाने के योग्य हैं। तब युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर सहदेव ने श्री कृष्ण को प्रथम अर्घ्य दिया।

सन्धि का प्रस्ताव – पाण्डवों ने 12 वर्ष वन में बिताने के बाद 13वां वर्ष अज्ञातवास में बिताया। फिर कौरवों से अपना राज्य मांगा। जब कौरवों ने राज्य देने से इनकार कर दिया तब पाण्डवों ने युद्ध का निश्चय कर लिया। अन्तिम कोशिश के तौर पर श्री कृष्ण कौरवों के पास जाने को तैयार हुए। सबने उनको रोका कि कौरव मानने वाले नहीं हैं। तब श्री कृष्ण ने कहा कि संसार में कार्य सिद्धि के दो आधार होते हैं – एक मनुष्य का पुरुषार्थ, दूसरा ईश्वर इच्छा। मैं पुरुषार्थ तो कर सकता हूँ, ईश्वर इच्छा मेरे अधीन नहीं है। इसलिए फल मैं नहीं जानता। मैं इतना जानता हूँ कि मुझे शक्तिभर प्रयास कर लेना चाहिए।

हस्तनापुर पहुँचने पर महात्मा विदुर ने श्री कृष्ण से कहा कि दुर्योधन मानने वाला नहीं है। अतः आप सन्धि का प्रयत्न छोड़ दें। तब श्री कृष्ण ने कहा – सारी पृथ्वी खून से लथपथ होती देख रहा नहीं जाता। और यह भी कहा – आपत्ति में पड़े अपने व्यक्ति को बालों से पकड़कर भी खींचने का यत्न करे फिर मनुष्य निन्दा का पात्र नहीं होता।

श्री कृष्ण ने सन्धि के लिए दुर्योधन, धृतराष्ट्र, कर्ण से बात की, उन्हें समझाने का प्रयास किया। परन्तु सफलता न मिली। इस दौरान दुर्योधन ने उन्हें अपने यहां भोजन करने के लिए कहा। तब श्री कृष्ण बोले – राजन्! किसी के घर का अन्न दो कारणों से खाया जाता है – या तो प्रेम के कारण या आपत्ति पड़ने पर। प्रीति तो तुम में नहीं है और संकट में हम नहीं हैं।

यजुर्वेद कर मन्त्र है –

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्य०ञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।।

इस वेद मन्त्र में बताया गया है कि सुखी और उन्नत जीवन के लिए दो गुणों की आवश्यकता है – एक विद्वता और दूसरा बल। श्री कृष्ण में ये दोनों गुण विद्यमान थे। उनकी बुद्धिमता और नीति के कारण ही कम शक्ति के होते हुए भी महाभारत के युद्ध में पाण्डवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त की और शक्तिशाली, अत्याचारी राजा जरासन्ध को मार गिराया। श्री कृष्ण ने शारीरिक बल के सहारे ही अत्याचारी राजा कंस को यमलोक पहुँचा दिया और घमण्डी शिशुपाल का वध कर दिया।

गीता में श्री कृष्ण ने योग की परिभाषा ऐसे की है – योगः कर्मसु कौशलम्। अर्थात कार्य को कुशलता पूर्वक करना योग है। इस दृष्टि से श्री कृष्ण पूर्ण योगी थे क्योंकि उन्होंने जो भी काम किए उनमें अपनी बुद्धि बल और नीति से सफलता प्राप्त की। महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन और कर्ण के बीच लड़ाई हो रही थी तब कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में धंस गया और वह उसे निकालने के लिए रथ से नीचे उतरा। तब कर्ण ने अर्जुन को लड़ाई के धर्म की दुहाई दी और वह चिल्लाया कि निहत्थे पर वार करना धर्म नहीं है। इस पर श्री कृष्ण बोले – अरे कर्ण! अब धर्म–धर्म चिल्लाता है। परन्तु –

1. जिस समय तुम, दुशासन, शकुनि और सौबल सब मिलकर ऋृतुमती द्रौपदी को घसीट लाए थे, उस समय तुम्हें धर्म की याद न आई।
2. जब तुम बहुत से महार्थियों ने मिलकर अकेले अभिमन्यु को घेरकर मार डाला था, उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था।
3. जब 13 वर्ष के बनवास के बाद पाण्डवों ने अपना राज्य मांगा और तुमने नहीं दिया, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।
4. जब तुम्हारी सम्मति से दुर्योधन ने भीम को विष खिलाकर नदी में डाल दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।
5. जब वारणावत नगर में लाख के घर में तुमने सोते हुए पाण्डवों को जलाने का प्रयत्न किया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

कर्ण को इतना कहकर श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि इस प्रकार दलदल में फंसे कर्ण का वध करना पुण्य है, पाप नहीं। दूसरे ही क्षण कर्ण अर्जुन के वाण से जख्मी होकर गिर गया। यह थी श्री कृष्ण की नीतिमत्ता।

श्री कृष्ण को पाण्डवों द्वारा कौरवों के साथ जुआ खेलना, जूए में सब कुछ हार जाना और वन में चले जाना – इन सब बातों का पता तब चला जब पाण्डव वन में रह रहे थे। श्री कृष्ण वन में पाण्डवों से मिलने गए। वहां जाकर उन्होंने कहा कि यदि मैं द्वारिका में होता तो हस्तनापुर अवश्य आता और जूए के बहुत से दोष बताकर जुआ न होने देता। ऐसा था श्री कृष्ण का नैतिक बल और आत्मविश्वास। दूसरी और भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, धृतराष्ट्र आदि बड़े लोग जुआ और जूए से जुड़े अन्य दुष्कर्म अपनी आँखों के सामने देखते रहे, पर उनमें से किसी में भी उसे रोकने का साहस न हुआ।

–831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा , दूरभाष : 0172–4010679

समाजसेवी सुरेन्द्र कोहली का अभिनन्दन व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने करवाया यज्ञ

दिल्ली हाट में महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर समाजसेवी श्री सुरेन्द्र कोहली का अभिनन्दन करते विधायक वन्दना कुमारी व डा.अनिल आर्य । द्वितीय चित्र में–युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री यज्ञ करवाते हुए,साथ में महामंत्री महेन्द्र भाई व राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य।

दिल्ली हाट में आर्य महिला गौरव अवार्ड से 15 कर्मठ आर्य महिलायें सम्मानित

श्रीमती अनुराधा नागिया (पीतमपुरा), मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती वन्दना कुमारी से आर्य महिला गौरव अवार्ड प्राप्त करती हुई, साथ में प्रवीन आर्या,डा.अनिल आर्य।
द्वितीय चित्र में संतोष आर्या(विशाखा एनक्लेव) सम्मान प्राप्त करते हुए,साथ में डा.धर्मवीर आर्य।

प्रथम चित्र–श्रीमती कुसुम गुप्ता व द्वितीय चित्र–हर्ष आर्या(सरस्वती विहार) मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती वन्दना कुमारी से आर्य महिला गौरव अवार्ड प्राप्त करती हुई,साथ में प्रवीन आर्या,डा.अनिल आर्य।

प्रथम चित्र–श्रीमती अन्जु जावा–कमलेश ग्रोवर(प्रशान्त विहार) के लिये व द्वितीय चित्र–मंजुला गोयल(सैनिक विहार) मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती वन्दना कुमारी से आर्य महिला गौरव अवार्ड प्राप्त करती हुई,साथ में प्रवीन आर्या,डा.अनिल आर्य।

प्रथम चित्र–श्रीमती इन्द्रा आहुजा(सन्देश विहार) व द्वितीय चित्र–चेरी सहगल(दिलशाद गार्डन) मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती वन्दना कुमारी से आर्य महिला गौरव अवार्ड प्राप्त करती हुई,साथ में प्रवीन आर्या,सरोज भाटिया,अरूणा मुखी।

प्रथम चित्र–श्रीमती ललिता मोहन(पूर्वी पंजाबी बाग) व द्वितीय चित्र–बिन्दु मदान मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती वन्दना कुमारी से आर्य महिला गौरव अवार्ड प्राप्त करती हुई,साथ में प्रवीन आर्या,डा.अनिल आर्य।

जो मनुष्य दूसरे का उपकार करता है वह अपना भी उपकार न केवल परिणाम में अपितु उसी कर्म में करता है, क्योंकि अच्छा कर्म करने का भाव ही स्वयं उचित पुरस्कार है। – ऋषि दयानन्द

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती संतोष कपूर (आर्य समाज मुखर्जी नगर) का निधन।
2. श्रीमती मन्नो देवी (माता रामकुमार सिंह आर्य, दुर्गापुरी) का निधन।

दिल्ली हाट में 134 वां महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्न

प्रथम चित्र–श्रीमती ऋतु मल्होत्रा(रोहिणी) व द्वितीय चित्र–मनीषा आर्या(गाजियाबाद) मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती वन्दना कुमारी से आर्य महिला गौरव अवार्ड प्राप्त करती हुई,साथ में प्रवीन आर्या,डा.अनिल आर्य,सुरेश आर्य,सौरभ गुप्ता,प्रवीन आर्य।

प्रथम चित्र–श्रीमती संगीता गौतम (मयूर विहार) व द्वितीय चित्र–सरोज आहुजा(रानी बाग) मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती वन्दना कुमारी से आर्य महिला गौरव अवार्ड प्राप्त करती हुई, साथ में प्रवीन आर्या,डा.अनिल आर्य,चन्द्रप्रभा अरोड़ा,अमीरचंद रखेजा,स्वर्णा आर्या।

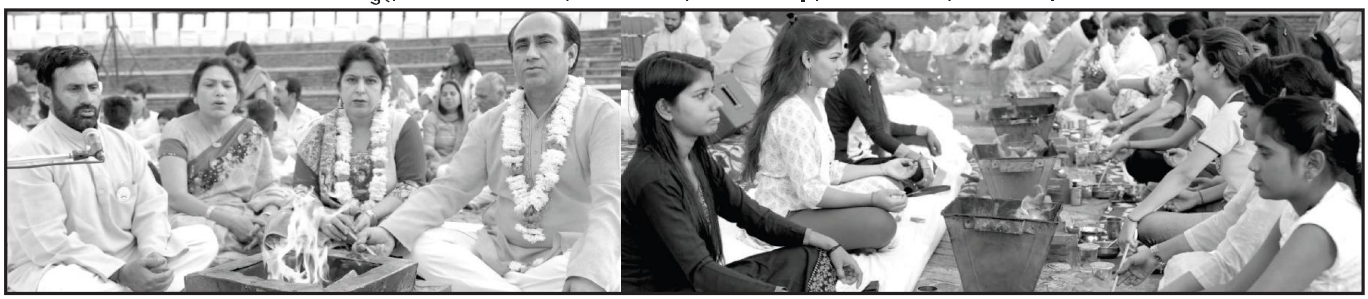

प्रथम चित्र–यज्ञ करते हुए सुरेश आर्य,हर्ष आर्या,रामकृष्ण शास्त्री व द्वितीय चित्र में आर्य युवती परिषद् की बालिकायें यज्ञ करते हुए।

प्रथम चित्र–गायक कलाकार–अंकित उपाध्याय,नरेन्द्र आर्य सुमन व श्रीमती सुदेश आर्या व उर्मिला आर्या व द्वितीय चित्र–उत्तरी दिल्ली नगर निगम स्थाई समिति के अध्यक्ष तिलकराज कटारिया का स्वागत करते यशोवीर आर्य,डा.अनिल आर्य,रामकुमार सिंह आर्य।

डी.ए.वी बटाला ने चैम्पियन शिप जीती

आर.आर.बावा डी.ए.वी कालेज फॉर गर्ल्स बटाला,पंजाब ने दूसरी बार ओवर आल ट्राफी जीती। प्रधानाचार्य डा.नीरू चड्डा व समस्त स्टाफ व टीम बधाई की पात्र है।

दिल्ली चलो बहनो दिल्ली चलो
सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का
राष्ट्रीय सम्मेलन

शनिवार, रविवार, 23, 24 दिसम्बर 2017

स्थानः आर्य समाज,बी ब्लाक,जनकपुरी,दिल्ली–110058

अपने पंहुचने की सूचना 16 दिसम्बर तक दे देवें जिससे यथोचित आवास व्यवस्था हो सके–

भवदीय

साध्वी डा.उत्मायति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्ष

सम्पर्कः9672286869,9810702760,9910234595,7289915010

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970